

कृष्णया हत्याकांड के सजायापत्ता आनंद मोहन पर नीतीश कुमार क्यों हुए मेहरबान

बिहार ही नहीं, देश भर के पिछड़ों में गया है गलत संदेश

बिहार की नीतीश कुमार सरकार के एक फैसले के कारण जोपालंग के तत्कालीन डीएम जी कृष्णया की हत्या के दोषी बाहुबली पूर्व सांसद आनंद मोहन सहित 27 कैदियों की रिहाई होने वाली है। राजनीतिक रूप से इस बहदर संवेदनशील फैसले के बाद से बिहार की राजनीति में बयानों का दौर जारी है। सत्तारूढ़ राजद और जदयू ने जहां पूर्व सांसद की रिहाई का स्वागत किया है, वही मुख्य विपक्षी पार्टी भाजपा इस मामले पर हमलावत तो जरूर है, लेकिन जासूसी कार्रवाई को ध्यान में रखते हुए संभल कर बयान दे रही है। इस राजनीतिक बयानबाजी से अलग कृष्णया की विधाया और आइएस एसोसिएशन ने नीतीश सरकार के फैसले पर आपत्ति

जताते हुए कहा है कि इससे लोक संघर्षों के मनोबल पर असर पड़ेगा। लेकिन इस फैसले का सियासी असर यह है कि देश भर के पिछड़े समुदायों में इसका गतन संदर्भ गया है। चूंकि कृष्णया पिछड़ा वर्ग से आते थे, इसलिए इस वर्ग के नेताओं का कहना है कि बिहार सरकार ने जो काम किया है, उसे समाज कीमी माफ नहीं करेगा। जिन लोगों को रिहा किया जा रहा है, उसमें केस-केसे लोग और कौन-कौन लोग हैं, यह सबको मालूम

आजाद सिपाही विशेष

है। इन तीन तरह की प्रतिक्रियाओं को देखने के बाद यह तो साफ हो गया है कि आनंद मोहन की रिहाई का सियासी मतलब भी है और इस पर आगे भी सियासत होगी, लेकिन सबसे अहम सवाल यह है कि नीतीश कुमार जैसे अनुभवी राजनेता ने ऐसा फैसला क्यों लिया? जो उनके लिए उल्लंघनवाला है। इसके पीछे का कारण जानने के लिए बिहार के सियासी इतिहास पर नजर डालनी जरूरी है। बिहार का राजनीतिक समने ला रहे हैं आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।



राकेश सिंह



उसके अंतिम संस्करण में अचानक भीड़ अगवबूला हो गई। भीड़ ने तत्कालीन डीएम कृष्णया पर हमला कर दिया और पीट-पीटकर उनकी हत्या कर दी।

भीड़ को उकसाने का आरोप आनंद मोहन पर लगा। मुजफ्फरपुर के खबरा इलाके में हुई इस हिंसा के बाद आनंद मोहन को ध्यान में रखते हुए संभल कर बयान दे रही है। इस राजनीतिक बयानबाजी से अलग कृष्णया की विधाया और आइएस एसोसिएशन ने नीतीश सरकार के फैसले पर आपत्ति

2024 के आम चुनावों की हालत के बीच विपक्षी एकता की धूरी के रूप में उभर रहे बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के एक फैसले से बिहार के एक बाहुबली पूर्व सांसद आनंद मोहन एक दो दिनों में जेल से निकलनेवाले हैं।

आनंद मोहन गोपालंग के तत्कालीन जिलाधिकारी जी कृष्णया की हत्या के मामले में दोषी थे और आजीवन कारावास की सजा काट रहे थे। बाबा पांच नवंबर 1994 की है। तब बिहार के गोपालंग में जी कृष्णया जिलाधिकारी हुआ करते थे। कृष्णया युवा आइएस अधिकारी थे और तेलंगाना के महबूबनगर से थे। कृष्णलैंद्र शुक्रान एक छोटे शुक्रान के अंतिम संस्करण के चलते आनंद मोहन की रिहाई का रासाना साफ हो गया है। इसी की विषयक दो लोगों के नेता विधायकों ने बिहार के अंतिम संस्करण के चलते आनंद मोहन की रिहाई के साथ पहुंचे थे। कृष्णलैंद्र की एक दिनों तक वह जेल में थे।

आनंद मोहन की रिहाई के लिए कानून में बदलाव

आनंद मोहन की रिहाई के लिए बिहार सरकार ने अपने कानून तक में बदलाव किया है। उसने जेल नियमों में संशोधन कर दिया है। इस संशोधन के चलते आनंद मोहन की रिहाई का रासाना साफ हो गया है। इसी की विषयक दो लोगों के नेता विधायकों ने बिहार के अंतिम संस्करण के चलते आनंद मोहन की रिहाई के साथ पहुंचे थे। कृष्णलैंद्र की एक दिनों तक वह जेल में थे।

बिहार की राजनीति में आनंद मोहन की ताकत

आनंद मोहन बिहार के सहरसा जिले के पचगिया गांव से आते थे। बताया जाता है कि

हैं। उनके दादा राम बहादुर सिंह एक स्वतंत्रता सेनानी थे। 1974 में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के संपूर्ण क्रांति के दौरान आनंद मोहन की राजनीति में एंट्री हुई थी। उस वक्त वह महज 17 साल के थे। उस वक्त वह महज 17 साल के थे। उस दौर में बिहार में जाति की लड़ाई चरम पर थी। अपनी-अपनी जातियों के लिए राजनेता भी खुलकर बोलते दिखते थे। उनकी दौर में आनंद मोहन का दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन पर बाहर आनंद मोहन का नाम जेल में आता है। इसके दो दिनों तक वह जेल में थे। इन दिनों तक वह जेल में थे।

बिहार की राजनीति में आनंद मोहन की ताकत

आनंद मोहन बिहार के सहरसा जिले के टिकट पर चुनाव जीते। तब बिहार

के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव थे। 1993 में उन्होंने बिहार पीपल्स पार्टी बना ली। आनंद मोहन उन दिनों लालू यादव के सबसे बड़े विरोधी थे।

उस दौर में बिहार में जाति की लड़ाई चरम पर थी। अपनी-अपनी जातियों के लिए राजनेता भी खुलकर बोलते दिखते थे। उनकी दौर में आनंद मोहन का दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन पर बाहर आनंद मोहन का नाम जेल में आता है। इसके दो दिनों तक वह जेल में थे।

बिहार की राजनीति में आनंद मोहन की ताकत

आनंद मोहन जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन ने जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन पर बाहर आनंद मोहन का नाम जेल में आता है। इसके दो दिनों तक वह जेल में थे।

बिहार की राजनीति में आनंद मोहन की ताकत

आनंद मोहन जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन ने जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन पर बाहर आनंद मोहन का नाम जेल में आता है। इसके दो दिनों तक वह जेल में थे।

बिहार की राजनीति में आनंद मोहन की ताकत

आनंद मोहन जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन ने जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन पर बाहर आनंद मोहन का नाम जेल में आता है। इसके दो दिनों तक वह जेल में थे।

बिहार की राजनीति में आनंद मोहन की ताकत

आनंद मोहन जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन ने जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन पर बाहर आनंद मोहन का नाम जेल में आता है। इसके दो दिनों तक वह जेल में थे।

बिहार की राजनीति में आनंद मोहन की ताकत

आनंद मोहन जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन ने जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन पर बाहर आनंद मोहन का नाम जेल में आता है। इसके दो दिनों तक वह जेल में थे।

बिहार की राजनीति में आनंद मोहन की ताकत

आनंद मोहन जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन ने जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन पर बाहर आनंद मोहन का नाम जेल में आता है। इसके दो दिनों तक वह जेल में थे।

बिहार की राजनीति में आनंद मोहन की ताकत

आनंद मोहन जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन ने जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन पर बाहर आनंद मोहन का नाम जेल में आता है। इसके दो दिनों तक वह जेल में थे।

बिहार की राजनीति में आनंद मोहन की ताकत

आनंद मोहन जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन ने जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन पर बाहर आनंद मोहन का नाम जेल में आता है। इसके दो दिनों तक वह जेल में थे।

बिहार की राजनीति में आनंद मोहन की ताकत

आनंद मोहन जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन ने जेल से निकलने के दौरान लड़ाई के घोर विरोधी के रूप में उभरे। आनंद मोहन पर बाहर आनंद मोहन का नाम जेल म

संपादकीय

बचाव अभियान: 'आपरेशन कावेरी' और सूडान

यु छहरत सूडान में फंसे भारतीयों को निकालने के लिए शुरू किया गया भारत का 'आपरेशन कावेरी' जारी है। भारत सरकार करब 3,000 नागरिकों को बाहर निकालने के लिए 72 घंटे की संघर्ष-विशेष अवधि का पूरा फायदा उठा रहा है। इस अभियान में भारतीय बायुसेना और भारतीय नौसेना शामिल हैं और इसका समन्वय विदेश मंत्रालय द्वारा किया जा रहा है। सूडान की सतारूढ़ परिसर बोलों के प्रमुख भी हैं, और अर्धसैनिक समूह आरएसएफ के पूर्व डिटॉन जनरल अबेल-फहर अल-बुहान, जो सूडानी समर्थक बोलों के प्रमुख भी हैं, और अर्धसैनिक समूह आरएसएफ के पूर्व डिटॉन जनरल होम्मद 'हेमेत' हवाई यातानों को बीच खारतू में भारी लाइट और देखते हुए अधिकारी नागरिकों को सड़क मार्ग से पार नहीं हो सकता जा रहा है, जो एक खतनाक यात्रा है। इसमें हवाई और समुद्र मार्ग द्वारा बाहर निकाला जाएगा। भारत सूडान में सबसे अधिक नागरिक और संसाधन रखने वाले अन्दरों के साथ समन्वय कर रहा है, जिसमें अमेरिका, ब्रिटेन, संयुक्त अधिकारी और सऊदी अरब शामिल हैं। इसमें रसद, निकासी अधियानों के समय और यहाँ तक कि सड़की और प्रांतीसी विमानों का उत्तरोग भी शामिल है। पहले से तय कैरियरिया की अपनी यात्रा के दौरान विदेश मत्री एस

सूडान को खाली कराने की घटना ने एक बाट किए उन विशेष चुनौतियों की ओट द्यान खींचा है जिनका सामग्री भारत को किसी भी संघर्ष में करना पड़ता है।

भ्रो होंगी व्योंगी वहाँ मानवीय कार्यकर्ताओं और एम्यूलेंस पर भी हमला किया गया है। इसमें कोई संरेह नहीं है कि उन्हें दशकों से इसी तरह के अभियानों के इकट्ठा अनुभवों से सहायता मिली है, जिनकी शुरुआत 1991 में खाड़ी नुद्द के दौरान इसी तरह के सबसे बड़े निकासी अभियान से हुई थी। सूडान को खाली कराने की घटना ने एक बार फिर उन विशेष चुनौतियों की ओट खींचा है जिनका सामग्री भारत को किसी भी संघर्ष में करना पड़ता है। अजल लगभग 14 मिलियन एम्यूलेंस भारतीयों और भारतीयों और भारतीयों के साथ देखते हुए व्यावहारिक रूप से ऐसा कोई संघर्ष नहीं है जो एक भारतीय नागरिक को प्रभावित नहीं करता। सरकार की जिम्मेदारी कहीं अधिक बनती है कि वह सुरक्षित लौटने के साथों के बायर फंसे पढ़े इन लोगों को बाहर निकालने में मदद करे। नीतीजतन, एक मानक संचालन प्रक्रिया, और यहाँ तक कि किंवदं एसें संस्कर्टों से निपटने के लिए एक विशेष बोल के बायर में सरकार को सोचना चाहिए, जैसा कि 2022 में विदेश मालों के लिए संसंदर्भ की शायदी द्वारा विपरिति की गई थी। यह भी जरूरी है कि इस तरह के संकट राजनीतिक प्रदर्शन का फिरी को दोषी ठहराने से मुक्त हो। भारत की प्रतिश्वेत दुनिया के फिरी को कोने में हर नागरिक को बचाने में अपने सभी सांसाधनों का उत्तरोग करने की क्षमता में निहित है, जब भी उन्हें जरूरत हो। वह प्रतिश्वेत बरकरार रहनी चाहिए।

अभियान आजाद सिपाही

दुनिया में तेल की खोज 1859 में मानी जाती है। भारत में 1967 से ही असम में तेल निकलने लगा था, अर्थात दस साल के अंदर ही। लेकिन तब से नाटक में तेल की खोज और निकासी का काम सामान्य रूप से नहीं हुआ। बाद में इस खींच की स्थापना हुई जो आज सर्वजनिक क्षेत्र की सबसे बड़ी कंपनी है।

भारत में तेल की खोज और निकासी का काम सामान्य रूप से नहीं हुआ



अरविंद मोहन

खबर दसेक दिन पहले आई थी लेकिन किसी भी अखबार और चैनल पर चर्चा नहीं रही। दस दिन बाद एक अमेरिकी अखबार ने खबर छपी है कि उसके उसे ऋणात्मक की चर्चा नहीं रही है जो असल में खबर है। और यह पक्ष है कि भारत भले ही में इंडिया का शेर मचाए उसकी तेल के मालों में विदेशों पर निर्भरता बढ़ती गई है और वह देसी उत्पादन में पिछड़ता जा रहा है। नब्बे के दशक तक भारत अपनी जरूरत का एक तिहाई ऐट्रोलियम देसी स्रोतों से जुटा लेता था जो अब बाहर पीसीटी से जारा ऊपर रह गया है। इस बीच बाय्ब्रे हाई के तेल और गैस का उत्पादन भी बढ़ा है। पर दो चीजें हुई हैं-एक तो तेल की खप्त ज्यादा तेजी से बढ़ी है (इस साल भी कीरीब दस पीसीटी गृद्धि बताई गई है)। दूसरे ऊर्जा के दूसरे स्रोतों की तलाश और उत्पयोग का काम ढीला छोड़ दिया गया है। भारत ने 2022-23 में कुल 158 अरब डालर का तेल आयात किया जबकि 2021-22 में यह 121 अरब डालर का था। इस अधिक में देसी उत्पादन का हिस्सा 85.5 पीसीटी से बढ़ाकर 87.3 पीसीटी रह गया है।

अब लगता है कि कूछ सालों में ही हमारा अपना उत्पादन दिखाने वा सूधने में रह जाए।

2018-19 में यह 83.8 पीसीटी था अर्थात् पांच सालों में पांच पीसीटी की गिरावट आई है जबकि पिछले एक साल में ही लगभग दो पीसीटी की कमी हो गई है। पहले हम सार्वजनिक परिवहन की जगह निजी परिवहन को बढ़ावा देने जैसी नीतिगत क्रियाओं का शेर मचाते थे लेकिन अब तो यही लगता है कि तेल आयात का जांच की मांग करता है जो योजना में स्थानों के बायर फंसे पढ़े इन लोगों को बाहर निकालने में मदद करे। नीतीजतन, एक मानक संचालन प्रक्रिया, और यहाँ तक कि किंवदं एसें संस्कर्टों से निपटने के लिए एक विशेष बोल के बायर में सरकार को सोचना चाहिए, जैसा कि 2022 में विदेश मालों के लिए संसंदर्भ की शायदी द्वारा विपरिति की गई थी। यह भी जरूरी है कि इस तरह के संकट राजनीतिक प्रदर्शन का फिरी को दोषी ठहराने से मुक्त हो। भारत की प्रतिश्वेत दुनिया के फिरी को कोने में हर नागरिक को बचाने में अपने सभी सांसाधनों का उत्तरोग करने की क्षमता में निहित है, जब भी उन्हें जरूरत हो। वह प्रतिश्वेत बरकरार रहनी चाहिए।



नब्बे के दशक तक भारत अपनी जरूरत का एक तिहाई ऐट्रोलियम देसी स्रोतों से जुटा लेता था जो अब बाहर पीसीटी से जारा ऊपर रह गया है। इस बीच बाय्ब्रे हाई के तेल और गैस का उत्पादन भी बढ़ा है। पर दो चीजें हुई हैं-एक तो तेल की खप्त ज्यादा तेजी से बढ़ी है (इस साल भी कीरीब दस पीसीटी गृद्धि बताई गई है)। दूसरे ऊर्जा के दूसरे स्रोतों की तलाश और उत्पयोग का काम ढीला छोड़ दिया गया है।

नब्बे के दशक तक भारत अपनी जरूरत का एक तिहाई ऐट्रोलियम देसी स्रोतों से जुटा लेता था जो अब बाहर पीसीटी से जारा ऊपर रह गया है। इस बीच बाय्ब्रे हाई के तेल और गैस का उत्पादन भी बढ़ा है। पर दो चीजें हुई हैं-एक तो तेल की खप्त ज्यादा तेजी से बढ़ी है (इस साल भी कीरीब दस पीसीटी गृद्धि बताई गई है)। दूसरे ऊर्जा के दूसरे स्रोतों की तलाश और उत्पयोग का काम ढीला छोड़ दिया गया है।

नब्बे के दशक तक भारत अपनी जरूरत का एक तिहाई ऐट्रोलियम देसी स्रोतों से जुटा लेता था जो अब बाहर पीसीटी से जारा ऊपर रह गया है। इस बीच बाय्ब्रे हाई के तेल और गैस का उत्पादन भी बढ़ा है। पर दो चीजें हुई हैं-एक तो तेल की खप्त ज्यादा तेजी से बढ़ी है (इस साल भी कीरीब दस पीसीटी गृद्धि बताई गई है)। दूसरे ऊर्जा के दूसरे स्रोतों की तलाश और उत्पयोग का काम ढीला छोड़ दिया गया है।

नब्बे के दशक तक भारत अपनी जरूरत का एक तिहाई ऐट्रोलियम देसी स्रोतों से जुटा लेता था जो अब बाहर पीसीटी से जारा ऊपर रह गया है। इस बीच बाय्ब्रे हाई के तेल और गैस का उत्पादन भी बढ़ा है। पर दो चीजें हुई हैं-एक तो तेल की खप्त ज्यादा तेजी से बढ़ी है (इस साल भी कीरीब दस पीसीटी गृद्धि बताई गई है)। दूसरे ऊर्जा के दूसरे स्रोतों की तलाश और उत्पयोग का काम ढीला छोड़ दिया गया है।

नब्बे के दशक तक भारत अपनी जरूरत का एक तिहाई ऐट्रोलियम देसी स्रोतों से जुटा लेता था जो अब बाहर पीसीटी से जारा ऊपर रह गया है। इस बीच बाय्ब्रे हाई के तेल और गैस का उत्पादन भी बढ़ा है। पर दो चीजें हुई हैं-एक तो तेल की खप्त ज्यादा तेजी से बढ़ी है (इस साल भी कीरीब दस पीसीटी गृद्धि बताई गई है)। दूसरे ऊर्जा के दूसरे स्रोतों की तलाश और उत्पयोग का काम ढीला छोड़ दिया गया है।

नब्बे के दशक तक भारत अपनी जरूरत का एक तिहाई ऐट्रोलियम देसी स्रोतों से जुटा लेता था जो अब बाहर पीसीटी से जारा ऊपर रह गया है। इस बीच बाय्ब्रे हाई के तेल और गैस का उत्पादन भी बढ़ा है। पर दो चीजें हुई हैं-एक तो तेल की खप्त ज्यादा तेजी से बढ़ी है (इस साल भी कीरीब दस पीसीटी गृद्धि बताई गई है)। दूसरे ऊर्जा के दूसरे स्रोतों की तलाश और उत्पयोग का काम ढीला छोड़ दिया गया है।

नब्बे के दशक तक भारत अपनी जरूरत का एक तिहाई ऐट्रोलियम देसी स्रोतों से जुटा लेता था जो अब बाहर पीसीटी से जारा ऊपर रह गया है। इस बीच बाय्ब्रे हाई के तेल और गैस का उत्पादन भी बढ़ा है। पर दो चीजें हुई हैं-एक तो तेल की खप्त ज्यादा तेजी से बढ़ी है (इस साल भी कीरीब दस पीसीटी गृद्धि बताई गई है)। दूसरे ऊर्जा के दूसरे स्रोतों की तलाश और उत्पयोग का काम ढीला छोड़ दिया गया है।

नब्बे के दशक तक भारत अपनी जरूरत का एक तिहाई ऐट्रोलियम देसी स्रोतों से जुटा लेता था जो अब बाहर पीसीटी से जारा ऊपर रह गया है। इस बीच बाय्ब्रे हाई के तेल और गैस का उत्पादन भी बढ़ा है। पर दो चीजें हुई हैं-एक तो तेल की खप्त ज्यादा तेजी से बढ़ी है (इस साल भी कीरीब

धनबाद/बोकारो/बेरमो

महत्वपूर्ण न्यूज़

प्रधानमंत्री मन की बात कार्यक्रम के 100वें एपिसोड को बनाना है ऐतिहासिक : रागिनी



झरिया (आजाद सिपाही)। प्रधानमंत्री नंदेंद्र मोदी मन की बात कार्यक्रम के 100वें एपिसोड को सफल बनाने के लिए बुधवार को झरिया कतरास मोड़ स्थित भाजपा कार्यालय में बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता भाजपा प्रेसरूम कार्यसमिति की सदस्य रामिनी ने की। बैठक में झरिया विधानसभा क्षेत्र के पार्टी पार्दिकरियों, मंडल अध्यक्षों और कार्यकर्ताओं शामिल थे। इस दौरान रामिनी सिंह ने कहा कि हम सभी के लिए यह गर्व का विषय है कि प्रधानमंत्री नंदेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम का 30 अप्रैल को 100वें एपिसोड का प्रसारण होने जा रहा है। भाजपा धनबाद जिला महानगर में भी अधिकारी जगह पर इस कार्यक्रम के प्रसारण का निर्धारण लिया गया है। ऐसे में पार्टी के हक कार्यकर्ता की नीतियों जिम्मेदारी बनती है कि ऐतिहासिक प्रसारण को सफल बनाना। इसे लेकर झरिया विधानसभा में 100 बृहत्यां पर 100 लोगों के साथ मन की बात देखना। उसी प्रारंभिक रूप से एवं कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि मन की बात कार्यक्रम को सफलता के बाहर बढ़ाव पर वहाँ के स्थानीय लोगों के साथ देखकर सफल और ऐतिहासिक बनायें। बैठक में जिला उपायक्षमानस धनबाद फेर कर दिया गया, जहाँ डॉक्टरों ने उसे मूल धैशित कर दिया। मूरुक पेशे से मंजदूर था।

एना कोलियरी में दो पक्षों में मारपीट, महिला सहित दो घायल



धनसार (आजाद सिपाही)। झरिया थाना अंतर्गत भगतडीह ऐना कोलियरी में बुधवार को दो पक्षियों में जमकर मारपीट हो गई। जिसमें एक पक्ष के विजय सिंह गंगीर रूप से घायल हो गए। उनका इलाज धनबाद एनपीसीएच अस्पताल में चल रहा है। वहीं दूसरे पक्ष की पुष्पा देवी को भी चोटे आई है। एक पक्ष के सुरेश यादव जो की पली पुष्पा देवी ने झरिया थाना में लिखित शिकायत देकर आरोप लगाया कि बुधवार की सुबह विजय सिंह में घेर में घेरी नीतवास से घुस गया और गलत ब्यवहार करने लगा। विरोध करने पर मारपीट करने लगा। साथ ही झूटा केस में फंसाने का धमकी भी दी। वहीं, विजय सिंह व उसकी पत्नी अनु देवी ने भी झरिया पुलिस को लिखित शिकायत देते हुए कहा कि सुरेश यादव मेरे घेर में घुसकर मारपीट की और अकेला पाकर अश्वील हरकत करने लगा। विरोध करने पर मुझे वे मेरे पति विजय सिंह को पहुंच गए। वहीं दूसरे पक्ष की जमीन पर अपना कब्जा जानाने को लेकर पुरानी रिजाली रही है। दोनों पक्ष उक्त खाली पड़ी जमीन पर धेरबदी करना चाहते हैं। इसी बात को लेकर कुछ दिनों में दोनों के बीच तनाव चल रहा था।

झारखंड राज्य जनसेवक संघ ने फूंका कृषि मंत्री, सचिव व निदेशक का पुतला



धनबाद (आजाद सिपाही)। झारखंड राज्य जनसेवक संघ के सदस्य पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत बुधवार को जिला परिषद से पैदल मार्च करते हुए रणनीत वर्मा चौक पर बैठक बोली। जहाँ कृषि मंत्री, कृषि सचिव एवं कृषि निदेशक का पुतला दहन करने के साथ ही कलम बद कार्य बहिष्कार किया। झारखंड राज्य जनसेवक संघ के प्रवक्ता ने कहा कि 28 अप्रैल को रांची कृषि निदेशकला तक आशेश के सम्मुख पुतला दहन करना जाएगा। झारखंड जन सेवक संघ 4200 ग्रेड एवं सदस्य प्रोन्नति की मांग कर रहे थे। उत्तरा दहन कार्यक्रम में संगठन के जिलायक्ष्मि दिनेश महारों, कोषायक्ष्मि रंजेत शर्मा, जनसेवक मोर्चा नरमी अख्तर, संसेव सौभाग्य, सुनील पाठे, पंकज अग्रवाल, कुलपील महतो आदि उपस्थित थे।

वेदांता इण्साल बना झारखंड में वनीकरण का विश्वस्तरीय तकनीक लाने वाला पहला संस्थान



बोकारो (आजाद सिपाही)। वेदांता इण्साल वनीकरण की जापानी पर्याति मियावाको तकनीक से झारखंड को और भी बड़ा भारा राज्य बनाने में जुटा है। इसी संदर्भ ने वेदांता इण्साल ने चमराईडी हांग में एक मियावाको वन स्थापित किया। जिसका उद्यान बोकारो के क्षेत्रीय मुख्य वन संस्करक आईएफएस डी वेकेटशरनू ने चमराईडी हांग में इण्साल स्टील टिपिंटेड के सीईओ आशीष गुप्ता और अन्य कार्यकर्ता सदस्यों की उपस्थिति में किया। इस दौरान मुख्य अतिथियों ने स्थल पर वृक्ष भी लगाए। कहा कि वह कदम वेदांता की सकारात्मक परिवर्तन लाने के जज्बे का एक उद्धारण है। वह वह समाज, राज्य के लिए ही या पूरे भारत के लिए ही। झारखंड को स्वच्छ और हरित बनाने के लिए मियावाको वन स्थल एक उल्लेखनीय अधार साबित होता है। कांजी, शीशम, कदम, कचनार कंचन, इमली, महोगी, अनार आदि उपस्थिति प्रजातियों के 53000 से अधिक पौधों के साथ चमराईडी हांग में 2.64 एकड़ भूमि को कवर करने वाली पर्यायोजना के साथ, संगठन राज्य और समाज कल्याण का अपना वादा खत्ता है। यह संगठन इस प्रकार के कार्यों के माध्यम से एक बेहतर झारखंड बना रहा है। जापानी वनस्पतिशास्त्री डॉ अकिरा मायावाको द्वारा विकसित वनीकरण की ऐतिहासिक विजयों के साथ प्रति वर्ष मीटर 3-5 पौधे लगाए जाते हैं, जिससे एक बहुस्तरीय हरा-भरा जंगल बन जाता है। वो वर्षों के बाद कोई आश्रयक रखरखाव नहीं होता है। वन स्थल की जैव विविधता को बढ़ाने और देशी वन्यजीवों के लिए एक सुरक्षित आश्रय प्रदान करने के लिए और पर्यावरों के लिए पानी का स्रोत प्रदान करने के लिए, एक तालाब भी बनाया गया है।

दामोदर नदी में नहाने के दैरान झूबने से युवक की हुई मौत



सिद्धी (आजाद सिपाही)। कांडरा दामोदर नदी में नहाने के दैरान झूबने से 34 वर्षीय एक युवक की मौत होने का मामला प्रकाश में आया है। मृतक की पहचान शक्ति सिंह के रूप में हुई है। वह हैट काड़ा का वर्षाक वाला था। उसके पिता नियमावली 2022 का अनुयालन सुनिश्चित करने के लिए बुधवार को जिला अनुश्रवण समिति की बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता भाजपा प्रेसरूम कार्यसमिति की सदस्य रामिनी ने की। बैठक में झरिया विधानसभा क्षेत्र के पार्टी पार्दिकरियों, मंडल अध्यक्षों और कार्यकर्ताओं शामिल थे। इस दौरान रामिनी सिंह ने कहा कि हम सभी के लिए यह गर्व का विषय है कि प्रधानमंत्री नंदेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम का 30 अप्रैल को 100वें एपिसोड का प्रसारण होने जा रहा है। भाजपा धनबाद जिला महानगर में भी अधिकारी जगह पर इस कार्यक्रम के प्रसारण का निर्धारण लिया गया है। ऐसे में पार्टी के हक कार्यकर्ता की नीतियों जिम्मेदारी बनती है कि ऐतिहासिक प्रसारण को सफल बनाना। इसे लेकर झरिया विधानसभा में 100 बृहत्यां पर 100 लोगों के साथ मन की बात देखना। उसी प्रारंभिक रूप से एवं कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि मन की बात कार्यक्रम को सफलता के बाहर बढ़ाव पर वहाँ के स्थानीय लोगों के साथ देखकर सफल और ऐतिहासिक बनायें। बैठक में जिला उपायक्षमानस धनबाद फेर कर दिया गया, जहाँ डॉक्टरों ने उसे मूल धैशित कर दिया। मूरुक पेशे से मंजदूर था।

चास - बेरमो अनुमंडल पदाधिकारी को अपने स्तर से प्रगति पर सतत निगरानी रखने का निर्देश

झारखंड नियोजन पोर्टल पर निबंधन करें निजी कंपनियां: डीसी

आजाद सिपाही संवाददाता

बोकारो। समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में झारखंड राज्य निजी क्षेत्र स्थानीय उम्मीदवारों के नियोजन अधिनियम 2021 और नियमावली 2022 का अनुयालन सुनिश्चित करने के लिए बुधवार को जिला अनुश्रवण समिति की बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता डीसी कुलदीप चौधरी ने की। बैठक में झरिया विधानसभा क्षेत्र के पार्टी पार्दिकरियों, मंडल अध्यक्षों और कार्यकर्ताओं शामिल थे। इस दौरान रामिनी सिंह ने कहा कि हम सभी के लिए यह गर्व का विषय है कि प्रधानमंत्री नंदेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम का 30 अप्रैल को 100वें एपिसोड का प्रसारण होने जा रहा है। भाजपा धनबाद जिला महानगर में भी अधिकारी जगह पर इस कार्यक्रम के प्रसारण का निर्धारण लिया गया है। ऐसे में पार्टी के हक कार्यकर्ता की नीतियों जिम्मेदारी बनती है कि ऐतिहासिक प्रसारण को सफल बनाना। इसे लेकर झरिया विधानसभा में 100 बृहत्यां पर 100 लोगों के साथ मन की बात देखना। उसी प्रारंभिक रूप से एवं कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि मन की बात कार्यक्रम को सफलता के बाहर बढ़ाव पर वहाँ के स्थानीय लोगों के साथ देखकर सफल और ऐतिहासिक बनायें। बैठक में जिला उपायक्षमानस धनबाद फेर कर दिया गया, जहाँ डॉक्टरों ने उसे मूल धैशित कर दिया। डीसी कुलदीप चौधरी ने बताया कि विभाग निबंधन करने के लिए विभाग द्वारा किया गया है। कुछ कंपनियों ने कर्मचारी का भी विवरण पोर्टल पर किया है, लेकिन इसकी रस्ताकारी काफी धीमी है। इस पर डीसी ने कंपनियों के प्रतिनिधियों के साथ सम्मन्वय कर जल्द निबंधन कार्य पोर्टल पर सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। सभी कंपनियों की सूची तैयार कर जनप्रतिनिधियों एवं जिला को भी उपरब्द्ध कराया को कहा। साथ ही, अंचल स्तर पर रोटरेस्टर जारी कर 15 दिनों के अंदर सभी अधिकारी में संचालित कंपनी प्रतिनिधियों/अधिकारी में बैठक कराना और सुनिश्चित कराने को कहा।

अंचलाधिकारी कंपनियों का निबंधन करने के लिए विभाग द्वारा तमिला किया गया है। कुछ कंपनियों ने कर्मचारी का भी विवरण पोर्टल पर किया है, लेकिन इसकी रस्ताकारी काफी धीमी है। इस पर डीसी ने कंपनियों के प्रतिनिधियों के साथ सम्मन्वय कर जिला निबंधन कार्य पोर्टल पर उपरब्द्ध कराया को कहा। साथ ही, अंचल स्तर प

